निबन्ध (ESSAY)

DTVF/17–ESY-**E1**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Arvind Pratap Singh

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट न. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): हिन्दी

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): अरविन्द

प्रश्न-पत्र सम्बन्धी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबन्ध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू० सी० ए०) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएँगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट किए गए शब्द-संख्या के अनुसार होना चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए कोई पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णत: काट दीजिए।

140

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

सराहनीय प्रयास है।

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड A और B में प्रत्येक से एक-एक चुनकर, दो निबन्ध लिखिये जो प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों में हो:

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Sections A and B, in about 1000–1200 words each: 125×2=250

खण्ड–A / SECTION –A

1. प्रत्येक असफलता में एक अवसर छिपा होता है।
   There is an inherent opportunity in every failure.

2. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता: एक मूल अधिकार जिसका सबसे ज़्यादा दमन तथा दुरुपयोग हुआ।
   Freedom of expression: Most suppressed and most misused fundamental right.

3. 'समृद्ध राष्ट्र' हेतु 'स्वस्थ राष्ट्र' एक पूर्व शर्त है।
   A 'healthy nation' is a prerequisite for 'wealthy nation'.

4. "देशभक्ति मेरा आखिरी आध्यात्मिक सहारा नहीं बन सकती, मेरा आश्रय मानवता है। मैं हीरे के दाम मे ग्लास नहीं खरीदूंगा और जब तक मैं जिंदा हूँ मानवता के ऊपर देशभक्ति की जीत नहीं होने दूंगा।" कट्टर राष्ट्रवाद पर व्यक्त रविन्द्रनाथ टैगोर के उपरोक्त विचारों की समकालीन प्रासंगिकता पर समालोचनात्मक टिप्पणी कीजिये।
   "Patriotism cannot be my final spiritual shelter; my refuge is humanity. I will not buy glass for the price of diamonds, and I will never allow patriotism to triumph over humanity as long as I live." Critically comment on the contemporary relevance of Rabindranath's above views on radical nationalism.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"देशभक्ति मेरा आखिरी आध्यात्मिक सहारा नहीं बन सकती, मेरा आश्रय मानवता है---।"

—— × ——

सभ्य मानवता के 5000 वर्षों के इतिहास में 'राष्ट्रवाद' महज चार शताब्दी पुरानी विचारधारा है। परिवार, कबीला, धर्म, राज्य, राष्ट्र-राज्य और विश्व-ग्राम तक मानव एक ऐसे सामुदायिक विचार की खोज में भटकता रहा है जो उसे शांति, सुरक्षा और आश्रय दे सके। इस यात्रा में राष्ट्रवाद सर्वाधिक शक्तिशाली विचार सिद्ध हुआ है। एक ऐसा विचार, जिसके लिए मरा जा सके, मारा जा सके। क्योंकि जहाँ 'राष्ट्रवाद' अपने राष्ट्र की उन्नति पर जोर देता है, वहीं 'कट्टर राष्ट्रवाद' अपने राष्ट्र की उन्नति के साथ-साथ दूसरे राष्ट्रों की अवनति की भी इच्छा रखता है। यही इच्छा संघर्ष की ओर ले जाती है।

मानवता का इतिहास हमें इतना तो सिखाता ही है कि बुराई और अच्छाई में से अच्छाई का चयन तो आसान है पर 'अच्छे' और 'अधिक अच्छे' के बीच का संघर्ष ही ज्यादा कठिन और निर्णायक सिद्ध हुआ है। 'मुक्तिबोध' के शब्दों में कहें तो-

"बुरे अच्छे बीच के संघर्ष से भी उग्रतर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अच्छे व उससे अधिक बीच का संगर
गहन - किंचित सफलता
अतिभव्य असफलता, अतिरेकवादी प्रवृत्ति।
की ये व्यथाएँ बहुत प्यारी हैं।"

कट्टर राष्ट्रवाद पर रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचारों की प्रासंगिकता को हमें इसी पृष्ठभूमि में समझना होगा। हमें समझना होगा कि कैसे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और वैचारिक - सभी क्षेत्रों में राष्ट्रवाद ने एक सृजनात्मक भूमिका अदा की है और कैसे 'कट्टर राष्ट्रवाद' हमें संघर्ष की ओर ले गया है। कि कैसे जैसे मानवता 'विश्व-ग्राम के मुहाने पर पहुँची ही थी जब 'कट्टर राष्ट्रवाद' उसे पीछे खींचता हुआ प्रतीत हो रहा है। कि कैसे उदारीकरण और वैश्वीकरण के दो दशकों बाद आज हम ब्रेक्सिट, ट्रम्प, मरीन ल पेन, चीन के विस्तारवादी रवैए, सीरिया संकट, कोरिया की समस्या, संरक्षणवाद और 'पर्यावरणीय जिम्मेदारियों से भागने' के परिदृश्य का सामना कर रहे हैं। रवीन्द्रनाथ टैगोर इतने प्रासंगिक शायद कभी नहीं रहे।

good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सामाजिक रूप से 'राष्ट्रवाद' ने राष्ट्र के भीतर बस रहे लोगों के मध्य संघर्षों को गौण बनाया। लोगों को उन्नति का मार्ग दिखाया और आईचारे की नई संस्कृति विकसित की। पर धीरे-धीरे 'कट्टर राष्ट्रवाद' के विकास ने सम्पूर्ण मानवता को जोड़ने वाले 'धर्म' जैसी संस्थाओं को भी नकार दिया। ईसाइयों ने ईसाइयों पर आक्रमण किए, मुस्लिमों ने मुस्लिमों पर आधिपत्य जमाया और बौद्धों ने बौद्धों का संहार किया। प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध में यह प्रक्रिया हमें अपने चरम रूप में दिखाई देती है। अर्थात् लगभग चार दशकों तक राष्ट्रों में यह विश्वास सा हो गया कि शांति और समृद्धि की राह युद्ध से ही होकर जाती है-

"एक ही पंथ अब जग में जीने का
अभ्यास करो छागियो रक्त पीने का।"

पर जब भ्रम टूटा तो मानवता की मुट्ठी में केवल राख बंद थी।

आर्थिक रूप से वाणिज्यवाद और व्यापारिक पूंजीवाद ने राष्ट्र के विकास में अहम भूमिका

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निभाई। पर यही वह क्षेत्र था जहाँ राष्ट्रवाद का दोहरा चरित्र प्रारम्भ से ही स्पष्ट था। रवीन्द्रनाथ टैगोर के साथ-साथ महात्मा गांधी ने भी बार-बार लक्षित किया कि 'राष्ट्रवाद' 'अपने' और 'पराए' के भेद को जन्म देता है। वह अपने देश के लोगों के लिए जितना दयालु और सौहार्द्रपूर्ण है वहीं 'अप्रवेशों' के लिए उतना ही अत्याचारी और शोषक। भारत के आर्थिक पतन में ब्रिटिश नीतियों की भूमिका से कौन परिचित नहीं है। पर आज जब हम वैश्वीकरण, निजीकरण और उदारीकरण के माध्यम से 'राष्ट्र' की सीमाओं से ऊपर उठ रहे थे कि पश्चिमी देशों में संरक्षणवाद की नई प्रवृत्ति दिख रही है। पश्चिमी देशों के इस व्यवहार से विकासशील देश ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं।

सांस्कृतिक और राजनैतिक रूप से भी 'राष्ट्रवाद' और 'कट्टर राष्ट्रवाद' का यह क्रमशः दमनात्मक और विभाजनकारी प्रभाव स्पष्ट है। 'राष्ट्रवाद' जहाँ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संस्कृतियों के आदान-प्रदान को भी मान्यता देता है वहीं 'कट्टर राष्ट्रवाद' में स्वयं को सही और दूसरों को भ्रमित मानने की एक कूपमंडूक प्रवृत्ति होती है। कट्टर राष्ट्रवाद दूसरों से कुछ भी ग्रहण करने के प्रति शंकाशील रहता है। वस्तुतः उसमें तार्किकता का अभाव पाया जाता है। आज 'उत्तर कोरिया' के बिगड़ैल बच्चे जैसे व्यवहार के पीछे कट्टर राष्ट्रवाद ही प्रमुख कारण है।

राजनीतिक रूप से भी इन दोनों प्रभावों को स्पष्ट देखा जा सकता है। जहाँ महात्मा गाँधी और नेल्सन मण्डेला ने राष्ट्रवाद का प्रयोग औपनिवेशिक और शोषक शक्तियों के विरुद्ध जनता को एकजुट करने में किया, वहीं कट्टर राष्ट्रवाद सीमाओं के दोनों तरफ महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति का साधन बनता है और घृणा, हिंसा का प्रचारक। आश्चर्य तो तब होता है जब लोकतांत्रिक संस्कारों का तख्तापलट

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करते हुए भी सेनाएं राष्ट्रवाद का ही हवाला देती हैं। संभवतः इसीलिए कहा गया है कि "देशभक्ति बदमाशों और सभ्यनीतिज्ञों की अंतिम शरणगाह है।"

धार्मिक रूप से देखें तो पश्चिम में राष्ट्रवाद का विकास ही धार्मिक जकड़बंदियों से मुक्ति की आकांक्षा के चलते ही हुआ था। राष्ट्रवाद ने इस दिशा में पर्याप्त सफलता पाई, पर 'सभ्यताओं के संघर्ष' के इस युग में कट्टर राष्ट्रवाद ने पुनः राष्ट्र और धर्म का घालमेल करना प्रारम्भ कर दिया है।

भारतीय परिस्थितियों की चर्चा कर सकते हैं। उदाहरण गोवध पर चल रहा विवाद

इन परिस्थितियों में हमें वर्तमान परिदृश्य पर पुनः विचार करना चाहिए। आज किसी भी देश की समस्या अकेले उसकी अपनी नहीं है। एक देश की आर्थिक नीतियों का प्रभाव पूरी दुनिया पर पड़ता है - चाहे वह 2008 की अमेरिकी अर्थव्यवस्था हो या चीन की मौद्रिक नीति। आज जो युद्ध सीरिया में होगा वह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

केवल मध्यपूर्व को ही नहीं वरन शरणार्थी-समस्या के रूप में कनाडा, जर्मनी को भी प्रभावित करेगा। चाहे ओजोन परत का क्षय हो, आर्कटिक का पिघलना या वैश्विक तापन - समस्याएँ किसी एक देश की नहीं है। लैंगिक विभेद से ~~लेकिर~~ लेकर वैश्विक महामारियों तक राष्ट्रों के बीच सहयोग अपरिहार्य हो गया है। हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ इंटरनेट भी वैश्विक है और आतंकवाद भी।

7

इसीलिए प्रारम्भ में मैंने कहा था कि कट्टर राष्ट्रवाद पर रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचार संभवतः इतने प्रासंगिक कभी नहीं रहे। टैगोर औपनिषदिक परम्परा के संत थे। तुलसीदास की तरह उनका भी मानना था कि

"परहित सरिस धरम नहिं भाई
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।"

आधुनिकता-बोध और परस्पर-बोध उनके

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्यक्तित्व में घुल-सा गया है। उन्होंने यह विचार ये राष्ट्रवाद के उफान के दिनों में व्यक्त किए थे। पर आज यह स्वीकार करते हुए भी कि देशभक्ति और राष्ट्रवाद ने महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक भूमिका निभाई है, हमें उससे आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

अच्छा प्रयास है।

स्वयं टैगोर ने ऐसे भारत की कल्पना की थी "जहाँ शब्द सत्य पर आधारित हो, व्यक्ति क्षुद्रताओं से मुक्त हो, मस्तक ऊँचा हो और हृदय-मुक्त"।

कट्टरता पर मानवता का वरण वास्तव में टैगोर का ही विचार नहीं है वरन सम्पूर्ण भारतीय चिन्तन परम्परा का सार है और यही वरेण्य है—

"अयं निजः परोवेति गणनां लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥"

लेखनशैली को और प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

—×—

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड–B / SECTION –B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. पर्यावरणीय सरोकार: अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का नवीन प्रेरक बल।
   Environmental concern: The new driving force of International politics.
2. एक दिशाहीन छात्र आंदोलन समाज के लिये खतरा है।
   A directionless student movement is threat to society.
3. न्यायिक जवाबदेही: न्याय सुनिश्चित करने हेतु एक अत्यावश्यक साधन।
   Judicial Accountability: A much needed tool to ensure justice.
4. 2022 तक किसानों की आय दुगुना करना: एक सपना या हकीकत।
   Doubling the farmers income by 2022: A myth or reality.

२०२२ तक किसानों की आय दुगुना करना:
: एक सपना या हकीकत

—— x ——

पिछले बीस वर्षों में आत्महत्या करने वाले किसानों का आँकड़ा 10 से 15 हजार प्रतिवर्ष के बीच झूलता रहा है - नीति निर्माताओं के सामने एक विराट प्रश्नचिह्न की तरह। जब हम किसानों को उनकी मेहनत से उगाई फसलों को सड़कों पर बिखेरते देखते हैं, या मध्यप्रदेश में किसानों को पुलिस की गोली से मरते या जंतर-मंतर पर नरमुण्डों के साथ प्रदर्शन करते अधनंगे तमिलनाडु के किसानों को - तो फिर किसानों की

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पीड़ा को व्यक्त करने के लिए आँकड़ों की आवश्यकता नहीं रह जाती है।

एकतरफ तो भारत की 60% जनसंख्या किसी न किसी रूप में आजीविका के लिए कृषि पर आश्रित है वहीं अर्थव्यवस्था और सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र की हिस्सेदारी लगातार घटती जा रही है। कृषि अब लाभदायक कार्य नहीं रहा - यह तो किसानों के साथ-साथ नीति-निर्माता भी मानने लगे हैं। ऐसे में 2022 तक किसानों की आय को दुगुना करने का लक्ष्य एक महत्त्वाकांक्षी स्वप्न प्रतीत होता है। परन्तु यह एक ऐसा स्वप्न है जिसे हकीकत में बदलना आवश्यक भी है और अपरिहार्य भी।

स्वप्न और यथार्थ के इस सम्बंध को मानने के लिए जरूरी है कि किसानों और कृषि के समक्ष आज क्या कठिनाइयाँ हैं, उन्हें दूर करने के लिए प्रयास क्या हो रहे हैं और सपने को हकीकत में बदलने के लिए किन अतिरिक्त प्रयासों की आवश्यकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सर्वप्रथम तो यह कि परम्परागत रूप से ही भारतीय किसान दुनिया के सबसे मेहनतकश किसानों में से एक रहा है। ऐसे में समस्या की जड़ सामाजिक परिस्थितियों और संस्थागत कमियों में निहित है। आर्थिक उदारीकरण के बाद ही नीतियों के केंद्र में औद्योगिक और सेवा क्षेत्रक ही रहे हैं। बारहवीं पंचवर्षीय योजना से ही कृषि-क्षेत्र पुनः चर्चा में आया है। यद्यपि की पी. साईनाथ जैसे पत्रकार नब्बे के दशक से ही इस समस्या पर ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। 'एवरीबडी लव्स ए गुड ड्रॉट' इस दिशा में आँख खोलने वाली पुस्तक है।

कृषि क्षेत्र में समस्याएँ व्यापक हैं- जनसंख्या का अत्यधिक दबाव, मूल्य-निर्धारण प्रक्रिया में कृषकों की भूमिका नहीं, कृषि-इनपुट का बढ़ता मूल्य, ऋणजाल, खाद्यान्न-केंद्रित-कृषि, भण्डारण-परिवहन सुविधाओं का अभाव और मानसून पर निर्भरता तो इन समस्याओं की एक झाँकी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भर है।

व्यक्तिगत रूप से भी समाज में किसानों की हैसियत घटी है। ऐसे परिवार लगातार पिछड़ते जा रहे हैं जहाँ कृषि से इतर रोजगार करने वाला एक भी व्यक्ति न रहा है। हमारी-आपकी दृष्टि में भले ही यह 'आँकड़ा' पर्याप्त न हो पर प्रेमचंद के 'होरी' से लेकर आज के किसान तक यह 'मरजाद', यह 'प्रतिष्ठा' ही सबसे महत्त्वपूर्ण है। यही कारण है कि अपेक्षाकृत समृद्ध प्रदेशों यथा- महाराष्ट्र और तमिलनाडु में आत्महत्या की दर अधिक है क्योंकि उद्योगपतियों के विपरीत ऋण न चुका पाने पर होने वाली प्रताड़ना उनके लिए अवसादकारक सिद्ध होती है।

किसानों की हालत का अंदाजा इस तथ्य से भी लगाया जा सकता है कि लगातार दो वर्षों तक कम बारिश होने पर ही बुंदेलखण्ड, विदर्भ या कालाहांडी - बोलांगीर-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- कोरापुट क्षेत्र में नागार्जुन की कविता का यह दृश्य सजीव हो उठता है कि-

"कई दिनों तक चूल्हा रोया
चक्की रही उदास।
कई दिनों तक काली कुतिया
सोई उसके पास॥
कई दिनों तक लगी भीत पर
छिपकलियों की गश्त।
कई दिनों तक चूहों की भी
हालत रही शिकस्त॥"

Good

वस्तुतः यह सत्य है कि उदारीकरण के बाद से उत्पन्न समृद्धि का फायदा लाभ पहले से ही उच्च स्तर पर काबिज तबके को मिला है। किसानों की हालत में तुलनात्मक सुधार तो हुआ पर विषमता का स्तर बढ़ने से वह सुधार नगण्य हो गया। इस तथ्य को समझकर ही नीति-निर्माताओं ने कृषि क्षेत्र में 4% वार्षिक वृद्धि का लक्ष्य रखा।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पिछले वर्षों में सरकार की ओर से ए.पी.एम.सी. की भूमिका को सीमित करने पर राष्ट्रीय कृषि बाजार के विकास का प्रयास किया गया है। साथ ही प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, सब्सिडियों का योक्तिकीकरण व नकद हस्तांतरण, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, और भण्डारण, शोध, ग्रामीण विद्युतीकरण के प्रयास किए जा रहे हैं।

पर 2022 तक कृषकों की आय को दो गुना करने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमें दोहरी रणनीति अपनानी होगी। ऐसी रणनीति जिसमें गाँव और शहरों को, कृषि और उद्योग को विरोधी नहीं अपितु एक-दूसरे का पूरक बनाना होगा। एक ऐसी रणनीति जो गाँधी, नेहरू और अम्बेडकर के विचारों के समन्वय पर आधारित हो।

इस रणनीति में पहला चरण होगा उपरोक्त योजनाओं को जमीनी स्तर पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रभावकारी ढंग से लागू करना। इसके लिए प्रत्यक्ष अंतरण की तरह अन्य योजनाओं के लिए भी एक निगरानी तंत्र विकसित करना होगा। उदाहरण के लिए हाल की एक खबर के अनुसार प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के 40% क्लेम ही दिए गए और बीमा कंपनियाँ 6000 करोड़ के लाभ-स्तर पर हैं। ऐसी स्थितियों को शून्य करना होगा। किसानों की प्रकृति पर निर्भरता को कम करना इसी चरण में शामिल होगा।

दूसरे चरण में कृषि को उद्योग से जोड़ना शामिल है। 'कृषि प्रसंस्करण उद्योग' इस चरण के केंद्र में है। इसे भण्डारण, फसल के नुकसान में कमी तो आएगी ही; साथ ही मूल्य-निर्धारण में किसानों की भागीदारी बढ़ेगी।

तृतीय चरण में कृषि पर जनसंख्या के अतिरिक्त दबाव को कम कर रोजगार के भिन्न अवसर सृजित करने होंगे। ये अवसर बाहर

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्थित उद्योगों के साथ-साथ गाँवों में ही देने होंगे, जिससे सामाजिक स्थानांतरण कम-से-कम हो। 'कौशल विकास' इस चरण में केंद्रीय भूमिका निभाएगा।

चौथे व अंतिम चरण में किसानों पर व्यय के भार को कम करना होगा। इसके लिए सरकारी व निजी क्षेत्र - दोनों को ग्रामीण भारत के सामाजिक क्षेत्र में निवेश करना होगा। शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसर मिलकर एक प्रकार से आय को दोगुना करने में सक्षम हैं। आज भोजन के अलावा किसान परिवार की तीन-चौथाई आय शिक्षा व स्वास्थ्य पर खर्च हो रही है।

इस रणनीति से हम 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। सम्भव है यह लक्ष्य 2022 की बजाय 2024-25 तक प्राप्त हो पर यह

अर्थव्यवस्था की सीमा को तक ही निबंध को सीमित न करें। इसे अन्य आयामों के साथ भी जोड़िए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में लिखें।
(Please don't write anything in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एक ऐसा लक्ष्य है जिसकी ओर देश ने यात्रा प्रारम्भ कर दी है। और जैसा कि मैंने पूर्व में ही कहा था कि एक ऐसा स्वप्न है जिसे हकीकत में तब्दील करना न सिर्फ आवश्यक है बल्कि अपरिहार्य भी। 'समावेशीविकास' की इससे स्पष्ट कसौटी नहीं हो सकती है।

इस रूप में 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने के लक्ष्य को हमें ऐसे स्वप्न में बदलना होगा जो हमें सोने न दें। राजनीतिक इच्छाशक्ति और क्रियान्वयन के दृढ़ संकल्प से इसे यथार्थ में बदला जा सकता है। बदलना ही होगा।

7°

निष्कर्ष लिखते समय भी किसी कविता या लोकोक्ति का प्रयोग कर उसे लेखन को और प्रभावशाली बना सकते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation